लन्च बाक्स

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

टन टन टन..... स्कूल में इन्टरवल का घन्टा बजा और वह तेज़ी से क़लास से बाहर निकल गई। इन्टरवल में सब लड़किया क्लास में लन्च बाक्स खोलती थी।

अन्डा पराठा। पूरी तरकारी। तोस कबाब। तरह तरह के ख़ानों की महक से वह घबरा जाती थी और क्लास से बाहर निकल जाती थी। कुछ लड़किया अपना लन्च बाक्स लेकर क्लास से बाहर निकल जाती थीं और क्लास के बाहर दरख़्त के नीचे बैठ कर लंच लेती थी। वह उधर उन लड़कियों के पास भी नहीं जाती थी। कुछ लड़कियाँ स्कूल के फाटक की तरफ चली जाती थीं। फाटक तो बन्द रहता था। किसी लड़की को इन्टरवल में फाटक के बाहर जाने की इजाज़त नहीं थी। फाटक के अन्दर कुछ फेरी वालों को बैठने की इजाज़त थी, उसमें एक बूढ़े मियाँ बीवी भी थे, जो अमरूद खीरा या इस तरह की दूसरी चीज़ें झव्वे में रखें हुये बेचते थे और शायद सालो साल से वहाँ बैठते रहे थे। स्कूल के मैनेजमेन्ट को उन पर बहुत ऐतबार था, उस लिये वहाँ स्कूल के फाटक पर कोई चौकीदार नहीं रहता था। और क्या मजाल कोई लड़की फाटक से बाहर निकल जाये। दोनो बड़े मियाँ बड़ी बी सब लड़कियों पर अच्छी नज़र रख़ते थे। इस तरह फल बेचने के साथ साथ उनका स्कूल चौकीदार का रोल भी था।

उस को कुछ समझ में नहीं आता था कि इन्टरवल में क्या करे, स्कूल के अन्दर इधर उधर टहलने लगती थी और सोचती थी कि किसी तरह इन्टरवल ख़त्म हो तो वो अपने क्लास में वापस जाये। क्योंकि अगर कभी वो इन्टरवल ख़त्म होने से पहले क्लास रूम में पहुंच जाती तो कोई न कोई लड़की उस को उस वक़्त भी ख़ाना ख़ाते मिल जाती और य`बात फिर उसके लिये बहुत तकलीफ़ देह हो जाती।

वह सोचने लगी उसे पढ़ने का ही मौक़ा मिल रहा है। यही बहुत बड़ी बात है। वजह ये थी कि वह अपने दादा दादी के पास रहती थी उसके माँ बाप का कब इन्तिक़ाल हुआ, उसे याद नहीं। उसने अपनी आखें अपने दादा और दादी के घर खोली थीं। दादा बहुत बूढ़े थे, थोड़ी बहुत पेंशन मिलती थी, घर का खर्च बहुत मुश्किल से चलता था। और कभी कभी उन के घर में चूलहा भी नहीं जलता था। उसे इस बात का अंदाज़ा भी था लेकिन यही शुक्र था कि उन सब के बाद में भी उस का स्कूल में दाखिला हो गया था। सुबह जो कछ मिल जाता था वह नाशता ख़ाना सब ही कुछ होता था। दाल रोटी या रोटी चटनी वह भी बाजरे की किसी किसी वक़्त बन पाती थी और कई कई दिन ख़ाई जाती थी, वह भी अगर पेट भर के खाई जाये तो जल्दी ख़त्म हो जाती थी। इस लिये कभी कभी फाक़ा होने से बेहतर है कि थोड़ा थोड़ा कई दिनों तक खाया जाये।

ऐसे हालात में उस के लिये लंचबाक्स की कोई गुन्जाइश नहीं थी।

वैसे तो वह पढ़ाई में मशगूल रहती लेकिन इन्टरवल उसके लिये तकलीफदह होता था। इस

लिये वह इन्टरवल में पूरे स्कूल में चक्कर लगाती रहती थी। या कभी कभी स्कूल के फाटक के आस पास खड़ी हो जाती और फाटक की सलाखों से बाहर सड़क पर देखती रहती। फाटक पर बैठे हुये बुढ़ा बुढ़ी उसे देखते रहते, उन्हे अंदाज़ा था कि ये सीधी साधी लड़की फाटक से बाहर नहीं जा सकती। वह ये भी सोचते थे कि उस लड़की ने आज तक अमरूद, केला या कोई फल नहीं ख़रीदा। उसे वहाँ फाटक में खड़े होने में इतनी परेशानी नहीं होती जितना इन्टरवल में क्लास में बैठने में होती थी।

आज भी वह इन्टरवल में फाटक के पास खड़ी थी और उसे भूक कुछ ज़्यादा ही लग रही थी। उसकी नज़रें बार बार फलों के झाबे पर पड़ रही थी। ले लो बेटा एक अमरूद ख़रीद लो, वह फल बेचने वाली बुढ़िया उस से कह रही थी।

बुढ़िया ने जब भी कभी उस से कुछ ख़रीदने को कहा, उसने नहीं शुक्रिया, उसे नहीं खरीदना है। कह कर मना कर दिया, लेकिन आज उस ने कहा, उस के पास अमरूद खरीदने के लिये पैसे नहीं हैं। बुढ़िया चुप हो गई, लेकिन फिर उस ने एक अमरूद उसकी तरफ बढ़ा दिया, लो ऐसे ही लेलो, पैसे मत देना। उसने एक दो बार मना किया, फिर उसने अमरूद पकड़ लिया। वो अमरूद क्या खा रही थी गलता था जैसे शाही दस्तरख़्वान पर बैठी हुई सत्तर क़िस्म के पकवान खा रही हो। अमरूद बहुत अच्छा था और बड़ा भी।

आज उस ने पेट भर के कोई चीज़ सालों बाद खाई थी।

इस तरह भूकी रह रह कर उसने इन्टर पास कर लिया। फिर उसकी शादी उसके पड़ोस के एक लड़के से हो गई। जो शुरू ही से उस मासूम भोली भाली लड़की को चाहता था।

"शाहीन तुम मेरे लिये कितनी लकी हो। जब हम लोगों की शादी हुई थी तो मैं एक जूनियर कलर्क था। आज न सिर्फ पब्लिक सरविस कमीशन के Competition में आ गया बल्कि इसी शहर में एस0 डी0 एम हों। वह मुस्कुराई थी फिर बोली ठीक है, ठीक है, थेंक यू।

दो बज रहे हैं। अभी बन्टी स्कूल से नहीं आया। वह घबराकर घड़ी हो गई थी। अरे दो ही तो बजे हैं। आता होगा। तुम ज़रा ज़रा सी बात पर घबरा जाती हो। तब ही स्कूल की बस के हार्न की आवाज़ आई और छः साल के बन्टी उछलते कूदते घर में दाखिल हुऐ। शाहीन ने उस का स्कूल बैग खोल लिया था और लन्च बाक्स खोल रही थी।

अरे वाह मेरे बेटे ने आज पूरा लन्च खा लिया। उसने बनटी को शाबाशी दी।

नहीं मम्मी.....

मैं ने आज सारा लन्च फेंक दिया। मुझे भूक नहीं लगी थी।

क्या तुमने लन्च फेंक दिया।?

मम्मी का एक ज़ोरदार चाटा बन्टी के गाल पर पड़ा था।

बन्टी हक्का बक्का खड़ा था।

उस की मम्मी ने आज तक उसे को नहीं पीटा था। अक्सर बड़ी से बड़ी शरारत के बाद भी।

शाहीन के शौहर भी सकते में थे।

इतना ज़ोरदार तमाचा। उनकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

★★★